1. प्रभु महान विचारूं कार्य तेरे

कितने अदभुत जो तुने बनाए।

देखुं तारे सूनूं गर्जन भयंकर

सामर्थ तेरी सारे भुमंडल पर

प्रशंसा होवे प्रभु यीशु की

कितना महान-2

प्रशंसा होवे प्रभु यीशु की

कितना महान-2

2. वन के बीच में तराई मध्‍य विचरूं

मध्‍ुर संगीत मैं चिडियों का सुनु

पहाड़ विशाल से जब मैं नीचे देखु

झरने बहते लगती शीतल वायु।

3. जब सोचता हूँ कि पिता अपना पुत्रा

मरने भेजा है वर्णन से अपार

कि क्रूस पर उसने मेरे पाप सब लेकर

रक्‍त बहाया कि मेरा हो उ(ार

4. मसीह आवे गा शब्‍द तुरही का होगा

मुझे लेगा जहां आनन्‍द महान

मैं झूकुँगा साथ आदर भक्‍ति दीनता

और गाऊंगा प्रभु कितना महान